भजन

तर्ज–दिल लूटने वाले

हक जिक्र करे पहले रूह का,तब याद रूहों को आती है
जब देते दर्द पिया अपना, तब ही आतम बिलखती है

1–रुहें अपने में कुछ भी नही, सब देन है देवन हारे की
हक मेहर का गुणगान करे, ये बख्शीश बख्शन हारे की
मेहर से धनी कहलाए, तो दो बोल जुबां कह पाती है

2–परआतम के अंग जाग उठे,तब समझो आत्म जागी है
जब रुह को अटल सुहाग मिले,तब रूह कहलाए सुहागी है
पर हुकम बिना ये जहर जिमी, रूहों से छूट ना पाती है

3–आशिक बन इक इक आत्म पर,वो प्यार ही प्यार लुटाते है
आलम ये खुदा की खुदाई का, गुनाहगारों को अपनाते है
रहमत की एक नजर उनकी ,पर्दा तिलसम का हटाती है